

What will I write 15

What will I write?
The evening has set in today,
It's drizzling outside-
I'm alone in the attic
Having tea and puffed rice and thinking,
What will I write?

I'm thinking of writing about
The son of brother Gopal .
In the junction of four roads,
He runs almost a broken shop of cigarettes and betel leaves,
From the morning he keeps on smoking in chain-
And coughs ;
I told him few days ago,
"You cough so much,
Still you smoke so much the whole day?
This way you will die very soon!"
He answered,
"I died inside when my father passed away
Nobody enters my shop.
My wife and kids shout on me
For money.
It's better to die than bearing this tension!"
Today also I saw while going,
He is staring at the road blankly
With the foggy specs and cigarette in his mouth.
What will I write?

In the junction of Narkelbagan,
The person sitting in the gate of the public toilet,
Is handicapped with a leg.
Beside is kept a scratch somehow fixed with ropes.
He takes two rupees from people
While they leave the washroom.
He was saying another person standing beside him,
"I work for twelve hours everyday
There's no day off.
I earn two hundred rupees a day.
No work, no pay.
Trying to raise up two daughters
Make them study,
If I don't come to work,

I'll die in hunger with them.
I try very hard to survive
In two hundred rupees for two people."
What will I write?

Will I write about nature now?
The drizzling rain outside on the tin shade,
I'm spending a carefree life-
Having tea and puffed rice,
So many people out there,
Die in stress of survival,
They die due to cardiac arrest-
They die due to cerebral attack-
Will I write about them?
With every sip of tea I'm thinking
What will I write?

14 ✓ कि निम्नर आदि? (15)

कि निम्नर आदि?

अथ (नरुद्वि) अरु

अरुद्वि विद्विद्विद्वि इति

विमलवर्णः एकम् आदि

ए अरु इति अरुद्वि अरुद्वि

कि निम्नर आदि?

निम्नर अरुद्वि (अवाम्द्वि) (अरुद्वि) अरुद्वि।

अरुद्वि अरुद्वि (अरुद्वि)।

अथ अरुद्वि अरुद्वि अरुद्वि अरुद्वि (अरुद्वि) अरुद्वि।

अरुद्वि (अरुद्वि) अरुद्वि अरुद्वि

अरुद्वि अरुद्वि अरुद्वि अरुद्वि

अरुद्वि अरुद्वि अरुद्वि

अरुद्वि अरुद्वि अरुद्वि

ଜାଣି ଯାଉ ଏକ ନିଜି ଯାତ୍ରା ଯାହାଗଣିନୀ?
ଅଠି ଯାମା ଭା? ୨୨

ଅଲଗା ୨

୧୧ ମାମା ଯାହା ନିଜି- ଅଧିକାର

ଜାଣିଲେ ନିଜି ନିଜି (ନିଜି ୨

ତେଜ ମୋରାଲେ (ନିଜି ନିଜି!

ଅଧିକାର ଅଧିକାର (ନିଜି

କାମାଣି କିମ୍ପା ଚିତ୍ରାଣି ଅଠି ୨

ଏକ ଦିନିଆଣି (ଅଠି ଅଠି ଅଠି ଅଠି ୨)

ଜାଣିଲେ ନିଜି ନିଜି (ନିଜି ନିଜି

କାମାଣି (ନିଜି କାମାଣି (ନିଜି ନିଜି

ଏକ ଅଠି ଅଠି ନିଜି ନିଜି ନିଜି

କାମାଣି କାମାଣି ନିଜି ନିଜି ଅଠି

ନିଜି ନିଜି ନିଜି

(6)

ନାମକରଣ ସମ୍ପର୍କ (ଆଡ଼େ)

ଏକଟି ବ୍ୟାକରଣ ଟିପ୍ପଣୀ (ନାମକରଣ)

ସ୍ୱର ଲୋକ (ଅ) (ନାମକରଣ)

ଗୁଣ ଏକଟି ବା (ନାମକରଣ)

ବାସ୍ତବ୍ୟ ଗୁଣ ଗୁଣ (କାହାଣୀଗାଳି ଗୁଣ)

ଏକଟି ସ୍ୱର ଗୁଣ

ବ୍ୟାକରଣ ଟିପ୍ପଣୀ (ଆଡ଼େ ଗୁଣଗୁଣ ସମ୍ପର୍କ)

ହ୍ରସ୍ୱ ଗୁଣ (ନାମକରଣ)

ବାସ୍ତବ୍ୟ ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ ଏକଟି ଗୁଣ ଗୁଣ

ଏକଟି ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ

ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ (ନାମକରଣ)

ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ

ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ ଗୁଣ

କୃତ୍ରିମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ସମାପ୍ତ କରିବା
 ଆମର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ (କୃତ୍ରିମ ଉପାଦାନ) ,
 କୃତ୍ରିମ ନିର୍ମିତ ଖାଦ୍ୟ
 ଦିନେ ନିର୍ମିତ ଖାଦ୍ୟ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ କ୍ଷତି କରେ ।
 ଏହି କୃତ୍ରିମ ଖାଦ୍ୟକୁ ଉପଲବ୍ଧି କରିବା
 ଦେଖିବା ପାଇଁ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ।
 କି ନିର୍ମିତ ଖାଦ୍ୟ ?

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ନିର୍ମିତ ନିର୍ମିତ ଖାଦ୍ୟ ?
 ବର୍ତ୍ତମାନ ସମୟରେ ବୃଦ୍ଧ ଶିଶୁ ଗୋଟିଏ
 ଗୋଟିଏ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ
 ନିର୍ମିତ ଖାଦ୍ୟ କୃତ୍ରିମ ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ
 ବର୍ତ୍ତମାନ ସମୟରେ ଆମର
 ଦୈନିକ ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ
 ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ ଖାଦ୍ୟ

(68)

ଅନୁସନ୍ଧାନ ୨(ପଂ) ଛାତ୍ର ୨୩୫

ଉଦାହରଣ ମିଳିତ ମିଶ୍ର ?

ଏହି ମିଶ୍ର ଗୋଟିଏ ଗୋଟି ଗାୟକ ଶ୍ରୀକାନ୍ତ

क्या लिखूं मैं ?(15)

क्या लिखूं मैं ?

आज संध्या उतर चुकी है ।

बाहर टिपटिप बारिश,

मैं अटारी में अकेला खड़ा,

चाय और मुरा खा रहा हूँ,और सोच रहा हूँ क्या लिखूं ?

सोच रहा हूँ,गोपालदा के बेटे के बारे में लिखूं,

चौरस्ते पर पान का टूटा फूटा दुकान चलाता है,

सुबह से लगातार एक के बाद एक,

बीड़ी फूंकता है और खाँसता है,

कुछ दिन पहले पूछा,

इतनी खासी है तुम्हारी,ऊपर से इतनी बीड़ियाँ फूंकते हो,

मर जाओगे तो

कहा,

बापू मरकर ऐसे ही मुझे जिन्दा मार गए ।

कोई दुकान में नहीं आता,

घर जाऊँ तो बहु-बेटे पैसे के लिए चीखते हैं,

इस टेंशन से मर जाना ही बेहतर है,

आज भी जाते जाते देखा,

धुंधली आँखों में धुंधले भविष्यत् को लिए,

राह में अकेला खड़ा रहता है ।

अभी भी मुँह में जलती बीड़ी और खासी,

क्या लिखूं मैं ?

नारियल बागान के मोड़ पर,एक पब्लिक टॉयलेट के किनारे,

जो आदमी बैठा हुआ है,उसकी एक टांग नहीं है,

बगल में रस्सी से बँधा हुआ उसका स्क्रेच रखा हुआ है,

पब्लिक टॉयलेट से जब कोई निकलता है,तो दो रूपए देता है उसे,

बगल में खड़ा एक आदमी से कह रहा था, ,

“बारह घंटे ऊ्यूटी करता हूँ,रोज़,

कोई छुट्टी नहीं है,

दिन में दोसौ रूपए वेतन मिलते है ।

नो वर्क,नो पे ।

दो बेटियों को पढ़ा -लिखाकर उन्हें इंसान बनाने की कोशिश कर रहा हूँ ।

अगर काम में न आऊं,तो उनको साथ लेकर अनाहार से मारा जाऊँगा । “

दोसौ रूपए से छः लोगों का परिवार चलता है,

बहुत कष्ट होता है,

क्या लिखूँ मैं ?

प्रकृति को लेकर लिखूँ,

बाहर टीन की छत पर टिपटिप बरसात,

मुर्दे के साथ चाय पीते हुए,निश्चिंत होकर जीवन गुज़ारता हूँ ।

बाहर अनगिनत लोग,कैसे जियेंगे इसी चिंता से मर जाते हैं,

हार्ट फेल होकर मर जाते हैं,

सेरिब्रल से मर जाते हैं,उनको लेकर लिखूँ,

क्या लिखूँ,सोचता हूँ,चाय पीते पीते ।